हिंदी भवन संदेश

(हिंदी प्रचारिणी सभा का सूचना-पत्र)

हिंदी भवन – लोंग माउंटेन

Website: hindipracharinisabha.com --- Email: hindipracharinisabha@hotmail.com

वर्ष 5 अंक 13 नवम्बर 2014

–भाषा गई तो संस्कृति गई –

संपादक / टंकन / सज्जा : यन्तुदेव बुधु

सम्पादकीय

आज हिंदी-शिक्षण की स्थिति !

आज प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूलों में हिंदी भाषा शिक्षण की स्थिति काफ़ी गम्भीर है। छात्र तथा अभिवावक हिंदी भाषा के पठन-पाठन को लेकर काफी सुस्त पड़े हैं। आज प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा पढ़ाने अथवा किसी भी पाठ को समझाने के लिए क्रिओली का सहारा लेना पड़ रहा है। आज की हिंदू जाति की मातृ भाषा लगभग शत प्रतिशत क्रिओली हो गई है। शिक्षण में भोजपुरी या हिंदी का प्रयोग बहुत कम हो रहा है। कई स्कूलों में तो अभिवावक पत्र द्वारा स्कूल-अधिकारी को सूचित करते हैं कि उनके बच्चे हिंदी पढ़ना बंद कर रहे हैं क्योंकि उनके अनुसार हिंदी भाषा अन्य विषयों के अध्ययन में बाधा पहुँचाएगी। इसलिए वे ऐसा कदम उठा रहे हैं।

माध्यमिक स्तर पर तो समस्या कुछ और ही है। एस. सी. और एच. एस. सी कक्षा के लिए काफी कम छात्र हिंदी भाषा का चयन करते हैं। पहली बात तो यह है कि भविष्य के लिए तथा अपनी आजीविका पाने के विषय में सोचकर छात्र ऐसा कदम उठाते हैं। अभिवावक तथा अध्यापकों की ओर से प्रोत्साहन प्राप्त नहीं हो रहा है। मेरा विचार है कि भाषा की पढ़ाई केवल नौकरी पाने के लिए नहीं होनी चाहिए। बल्कि एक अतिरिक्त भाषा का ज्ञान होना हर छात्र के लिए लाभप्रद सिद्ध हो सकता है।

हिंदी एक पूर्ण वैज्ञानिक भाषा है। अन्य भाषाओं की तुलना में हिंदी भाषा को पढने-लिखने में कठिनाई नहीं होती है। छात्र एस. सी. में बड़ी आसानी से 1 ग्रेड कमा लेते हैं अथवा ज़्यादा से ज़्यादा अंक पाते हैं। आज शिक्षकों की स्थिति भी खराब होती जा रही है क्योंकि कई माध्यमिक स्कूलों में ऐसी बात है कि एक अध्यापक को दो स्कूलों में काम करना पड़ रहा है। अतः सरकार की ओर से नये शिक्षकों की भर्ती के लिए संभावना बहुत कम दीख रही है। छात्रों की संख्या कम हो तो ऐसी स्थिति पैदा होनी ही है। इसका क्या समाधान हो सकता है ? इसपर आप खुद विचार कीजिए ! ■

यन्तुदेव बुधु

प्रधान-हिंदी प्रचारिणी सभा

इस अंक में पढ़िए :

– आवेदन 2014	पृ –2
– कार्यशाला उत्तमा (III)	पृ –2
– इतिहास के पन्नों से	पृ –2
– अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन	पृ –3 / 4
– हिंदी दिवस 2014	पृ –5
– ज़िलाध्यक्षों की बैठक	पृ –6
– छठी कक्षा की परीक्षा	पृ –6
– चित्रावली	पृ –6

हिंदी प्रचारिणी सभा की परीक्षाएँ 2014

प्राथमिक .....15 अक्टूबर से (क्षेत्रीय)

प्रवेशिका शनिवार 15 नवम्बर

सम्मेलन की परीक्षाएँ

परिचय	सोमवार 15 दिसम्बर से बुधवार 17 दिसम्बर तक
प्रथमा	सोमवार 15 दिसम्बर से बुधवार 17 दिसम्बर तक
मध्यमा	सोमवार 15 दिसम्बर से गुरुवार 18 दिसम्बर तक
उत्तमा I	सोमवार 15 दिसम्बर से बुधवार 17 दिसम्बर तक
उत्तमा II	सोमवार 15 दिसम्बर से बुधवार 17 दिसम्बर तक
उत्तमा III	सोमवार 15 दिसम्बर से शुक्रवार 19 दिसम्बर तक

विशेष सूचना

अगले वर्ष 2015 से प्रवेशिका से उत्तमा तृतीय खण्ड तक का पाठ्यक्रम बदल रहा है। अतः वर्ष 2015 के जनवरी महीने में सभी संस्थाओं को पाठ्यक्रम की एक प्रति भेज दी जाएगी। आपको यह भी सूचित किया जाता है कि पाठ्यक्रम सभा की वेब साइट पर भी उपलब्ध होगा। ■

आवेदन 2014

वर्ष 2014 के लिए प्रवेशिका–परीक्षा का आवेदन 26 अप्रैल को देश के पाँच केंद्रों में लिया गया था । इस परीक्षा के लिए कुल 1122 आवेदन प्राप्त हुए हैं । प्रवेशिका–परीक्षा 15 नवम्बर को होना तय है । सम्मेलन की परीक्षाओं का आवेदन 31 मई को लिया गया । संख्या इस प्रकार हैं –

परिचय		623
प्रथमा		391
मध्यमा		270
उत्तमा	I	225
उत्तमा	II	173
उत्तमा	II	162

परीक्षाओं के आवेदन के लिए 5 जुलाई को एक अतिरिक्त दिन दिया गया ताकि जो लोग आवेदन न भर पाए उन्हें भी इन परीक्षाओं में शामिल होने का मौका मिले । सम्मेलन की परीक्षाएँ इस वर्ष 15 दिसम्बर से शुरू होने वाली है । ■

.....

कार्यशाला उत्तमा (III)

1. टहल रामदीन जी कार्यशाला में निबन्ध पर बात करते हुए ।
2. सदस्या श्रीमती कामिनी रघुबर छात्रों के साथ बैठी हुई ।

इस वर्ष उत्तमा III (साहित्य रत्न)के छात्रों के निमित सभा द्वारा 8 अगस्त को हिंदी भवन में एक एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन हुआ जिसमें लगभग 50 छात्र–छात्राओं ने भाग लिया ।

यह कार्यशाला कार्यकारिणी के सदस्यों द्वारा चलायी गई । कार्यशाला का उद्देश्य था – छात्रों को परीक्षा से संबंधित जानकारियाँ प्रदान करना तथा प्रश्नपत्र की कठिनाइयों का समाधान बताना । सभा के मंत्री ने पाठ्यक्रम तथा प्रश्नपत्र पर बात की । प्रधान जी ने कंप्यूटर और हिंदी विषय पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी । कोषाध्यक्ष ने निबंध–लेखन पर अपना सुझाव दिया। अन्त में सभा के पूर्व प्रधान जी ने हिंदी के भविष्य पर छात्रों को अपना विचार दिया ।

समाप्ति पर छात्रों की ओर से कुछ प्रश्नोत्तर हुए । अल्पाहार के बाद छात्र वहाँ से प्रस्थान हुए। प्रतिभागी इस कार्यशाला से काफ़ी लाभांवित हुए । ■

इतिहास के पन्नों से .....

1937 का तिलक विद्यालय

तिलक विद्यालय की स्थापना 12 जून 1926 में हुई थी । यह संस्था भारतीय सेनानी बाल गंगाधर तिलक के नाम से स्थापित हुई थी । उस समय मॉरीशस में बसे गिरमिटया मजदूरों को धर्म परिवर्तन से बचाने तथा हिंदी भाषा तथा संस्कृति की रक्षा के लिए उस संस्था की स्थापना हुई । स्वयं–सेवकों तथा हिंदी सेवकों ने मिलकर यह कदम उठाया । उस समय यह विद्यालय घास–फूस तथा लकड़ी से बनाया गया । छात्र उसी झोंपड़ी में हिंदी भाषा सीखने के लिए आने लगे ।

कोई राजनीतिक समस्या न हो , इसलिए यह सभा 1935 में एक राष्ट्रीय नाम हिंदी प्रचारिणी सभा) लेकर पंजीकृत हुई । तब से यह सभा हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार करती आ रही है । यहाँ मॉरीशस के कोने–कोने से लोग हिंदी पढ़ने आते थे । इसी संस्था की बदौलत आज मॉरीशस में कई विश्व विख्यात हिंदी साहित्यकार पैदा हुए । सभा की प्रथम कार्यकारिणी समिति के 15 सदस्य हुए जो इस प्रकार थे :

पं0 बोलोराम मुक्ताराम चाटर्जी (प्रधान)
श्री रघुनन्दन रामरतन
श्री गिरिराज बखोरी
श्री जानकी प्रसाद लालमन
श्री सुरुज प्रसाद मंगर
श्री महावीर फागु
श्री रामगुण जिबसिया
श्री अनिरूद्ध द्वाारका
श्री शिव प्रसाद जीऊलाल
श्री शिव शंकर सिंह घूरन
श्री गरीबनवाज़ सितोहल
श्री बृजलाल धनपत
श्री गणेश रामफल
श्री नन्केश्वर मनबहाल
श्री राम सुन्दर चमन

इन संस्थापकों में श्री बृजलाल धनपत आज भी जीवित हैं और वे अब 103 वर्ष के हैं । यथा सम्भव वे सभा के उत्सवों में अपनी उपस्थिति देते रहते हैं । ■

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन 2014 – मॉरीशस

मॉरीशस सरकार व भारत सरकार द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय तथा देश की हिंदी प्रचारक व शैक्षणिक संस्थाओं के सहयोग से 29 से 1 नवम्बर तक हमारे देश में एक अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया । सम्मेलन का उद्घाटन समारोह 29 अक्टूबर को अपराह्न 6.30 बजे इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फेनिक्स में मॉरीशस के गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग जी द्वारा सम्पन्न हुआ ।

यह सम्मेलन 9 वें विश्व हिंदी सम्मेलन के मंतव्य के कार्यांवयन स्वरूप किया गया, जिसमें विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी शिक्षण और हिंदी के प्रचार–प्रसार की कठिनाइयों की जानकारी ली गई । इस सम्मेलन को कार्य रूप देने के लिए भारतीय उच्चायोग तथा विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा कई समितियों का गठन हुआ था ।

यह हिंदी सम्मेलन महात्मा गांधी संस्थान में तीन दिनों तक चला । विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महा सचिव श्री गंगाधर सिंह सुखलाल सम्मेलन का संचालन कर रहे थे, जो उन्होंने बड़ी खूबी के साथ किया । देश–विदेश के प्रतिभागियों ने 30 और 31 अक्टूबर को आयोजित सत्रों में अपने–अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये । दैनिक सत्रों को चार भागों में बाँटा गया था और हर एक सत्र के लिए एक अध्यक्ष की नियुक्ति हुई थी । प्रथम दिवस के अध्यक्ष थे – प्रो. सुदर्शन जगेसर, श्री सत्यदेव टेंगर, श्री संत कुमार राय तथा प्रो. रेशमी रामधनी । इस तरह सत्रों में वक्ताओं ने अपना–अपना आलेख प्रस्तुत किया । अपना विचार रखने के लिए हर एक को पन्द्रह मिनट प्रदान किये गए । सत्रों की समाप्ति पर प्रश्न होते थे तथा अध्यक्ष महोदय अपना विचार देते थे ।

<u>सत्रों का विवरण :</u>

30 अक्टूबर को बीज वक्तव्य सत्र में प्रो. जगेसर तथा भारतीय उच्चायुक्त महमहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल ने हिंदी भाषा पर बोलते हुए अपनी–अपनी निजी जानकारियाँ प्रस्तुत कीं । उस दिन के सत्रों में 15 प्रतिभागियों ने अपने–अपने आलेख प्रस्तुत किये ।

1. सरकारी हिंदी अध्यापक संघ के श्री सत्यदेव टेंगर ने मॉरीशस में प्राथमिक स्तर पर हिंदी–शिक्षण पर बात की ।

2. श्री लक्ष्मी ठाकुरी ने मॉरीशस में माध्यमिक स्कूल में हिंदी की पढ़ाई तथा स्थिति पर अपना विचार दिया ।

3. फिजी के हिंदी संगठन की अध्यक्षा श्रीमती मनीषा रामरखा ने फिजी में फीजियन हिंदी और मानक हिंदी के दो रूप बताए ।

4. सुश्री उदीची पाण्डेय ने सिंगापुर में हिंदी विषय पर बात करते हुए बताया कि वहाँ तीन मुख्य भाषाएँ बोली जाती हैं जो इस तरह हैं :– चाइनीज़, मलय तथा तमिल ।

5. श्रीमती सुनीता नारायण न्युज़ीलैंड में हिंदी विषय की वक्ता थी । उन्होंने बताया कि वहाँ हिंदी का शिक्षण अनौपचारिक है । कई संस्थाएँ हिंदी शिक्षण सेवाएँ प्रदान कर रही हैं तथा कक्षाएँ अधिकतर सप्ताहांत में चलती हैं ।

6. विडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से ऑस्ट्रेलिया से श्रीमती माला मेहता ने ऑस्ट्रेलिया में निजी संस्थाओं द्वारा हिंदी शिक्षण के कार्यों का ब्यौरा दिया ।

7/8. अफ्रीका तथा हिंद महासागरीय क्षेत्र के लिए श्रीमती मालती रामबली और श्री हीरालाल विश्वनाथ ने दक्षिण अफ्रीका में हिंदी के शिक्षण तथा प्रचार पर बात की ।

9. श्री रमणीक चीतू ने रोड्रिग्स में हिंदी स्पीकिंग युनियन की शाखा खोलने से संबंधित अपने अनुभव बाँटे । उन्होंने बताया कि अपनी दुकान का एक हिस्सा हिंदी स्कूल में बदल दिया है ।

10. महात्मा गांधी संस्थान की डॉ राजरानी गोबिन ने रीयूनियन टापू में हिंदी की भावी शिक्षकों के लिए वहाँ चलाए गए प्रशिक्षण का ज़िक्र किया ।

11. महात्मा गांधी संस्थान की डॉ श्रीमती संयुक्ता भुवन रामसारा ने पश्चिम और केंद्रीय अफ्रीका के देशों में अपने अनुभव के आधार पर बात करते हुए बताया कि उन जगहों पर विधिवत हिंदी की कक्षाएँ नहीं चलती है ।

12. श्री वीरजानन्द अवतार ने सूरीनाम में हिंदी पर बात की तथा बताया कि आज भी वहाँ भोजपुरी, हिंदी और अवधि लोगों के कंठ में मौजूद हैं ।

13. गयाना में हिंदी की स्थिति पर सुश्री उधो सिंह ने अपना वक्तव्य दिया । उन्होंने यह बताया कि गयाना में राजनीतिक उथल–पुथल के कारण बहुत से हिंदी प्रेमी देश छोड़कर भाग गए तथा कई पीढ़ियों तक हिंदी का प्रचार रूका रहा ।

14. कोलंबिया विश्वविद्यालय अमरीका के वरिष्ठ हिंदी प्राध्यापक ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के ज़रिए अपने देश में भाषा शिक्षण और चुनौतियों पर बात की ।

15. अंत में महात्मा गांधी संस्थान की श्रीमती संध्या अनचराज नवसाह ने हिंदी–भोजपुरी के परस्पर प्रचार एवं सुदृढ़ीकरण एवं पाठ्यक्रम में भोजपुरी के समावेश पर बात की ।

ता. 31 अक्टूबर के सत्रों में भी 15 प्रतिभागियों ने अपने–अपने आलेख प्रस्तुत किये । द्वितीय दिवस के सत्रों के अध्यक्ष रहे – श्रीमती सुनीता नारायण, प्रो. चित्तरंजन मिश्र, डॉ. श्रीमती विनोदबाला अरुण तथा श्री अजामिल माताबदल ।

..... शेष पृष्ठ 4 पर

.....शेष पृष्ठ 3 से

1. हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ने मॉरीशस में गैर–सरकारी संस्थाओं द्वारा हिंदी शिक्षण पर बात करते हुए बताया कि भाषा के प्रचार–प्रसार में हिंदी प्रचारिणी सभा जैसी संस्था की अहम् भूमिका रही है। उन्होंने सभा द्वारा निःशुल्क हिंदी शिक्षण तथा हिंदी के माध्यम से हिंदू धर्म की रक्षा हेतु किए जा रहे कार्यों का उल्लेख किया । हिंदी के प्रचार के लिए संचार के साधनों के प्रयोग का भी ज़िक्र किया ।

2. हिंदी स्पीकिंग यूनियन के प्रधान श्री राजनारायण गति ने बताया कि शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए असरकारी संस्थाओं को एक परिसंघ (Federation) बनाना चाहिए ।

3. ऋषि दयानन्द इंस्टीच्युट के प्रतिनिधि श्री देवभरत सिरतन ने हिंदी के छात्रों की घटती संख्या का कारण आजीविका की कम संभावना बताया ।

4. डी.ए.वी. डिग्री कालेज के प्रधान डॉ उदयनारायण गंगू ने संस्था द्वारा डिप्लोमा, बी.ए. और एम.ए. स्तर पर हिंदी शिक्षण पर बात की ।

5. महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग की अध्यक्षा डॉ श्रीमती अलका धनपत ने कहा कि बी.ए., एम.ए तथा पी.एच.डी कोर्स चलाने में महात्मा गांधी संस्थान मॉरीशस विश्वविद्यालय का पूरक है ।

6. महात्मा गांधी संस्थान के शोध एवं प्रकाशन विभाग की श्रीमती माधुरी रामधारी ने हिंदी पर हो रहे शोध कार्यों पर प्रकाश डाला ।

7. इसी विभाग के श्री राज हीरामन ने मॉरीशस में हिंदी प्रकाशन पर एक खोजपूर्ण विवरण प्रस्तुत किया । उन्होंने बताया कि आज तक हमारे देश में 175 कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । निबंधों में प्रो. बिसुनदयाल की 500 से अधिक रचनाएँ हैं ।

8. महात्मा गांधी संस्थान के भाषा–संसाधन केंद्र के अधिकारी श्री विनय गुदारी ने उस संस्थान की पहल पर शिक्षण के सभी स्तरों पर हिंदी शिक्षण में सूचना संचार प्रौद्योगिकी के सहयोग से लायी जा रही क्रांति का ज़िक्र किया ।

9.प्रो. महेन्द्र किशोर वर्मा ने यू. के में हिंदी की स्थिति पर अपना विचार दिया । उन्होंने यह बताया कि वहाँ पाठ्यक्रम में हिंदी है पर वहाँ परीक्षाएँ नहीं होती हैं ।

10. संयुक्त राज्य अमेरिका के श्री अशोक ओझा ने फिजी, सूरीनाम तथा दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में हिंदी शिक्षण की सहायता के लिए मॉरीशस में एक केन्द्र खोलने का विचार दिया ।

11. विडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से कनेडा के श्री रत्नाकर नराले ने परंपरागत तरीकों से हटकर नए तरीके से हिंदी सिखाने के अपने एक प्रयोग पर बात की ।

12. होलैंड के श्री नारायण मथुरा ने भी विडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से अपने देश में हिंदी शिक्षण की रूप रेखा प्रस्तुत की ।

13. महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर चितरंजन मिश्र ने नौकरी पाने की प्रणाली में हिंदी को शामिल करने की आवश्यकता पर बात की ।

14. भारतीय विदेश मंत्रालय की श्रीमती सुनीति शर्मा ने विदेशों में हिंदी के प्रचार–प्रसार में भारतीय दूतावासों की भूमिका पर बात की । उन्होंने बताया कि आज जब भारत एक वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है तो कई देशों में हिंदी के प्रति उत्साह पैदा हो रहा है ।

15. गुजरात विश्वविद्यालय के विदेशी–शिक्षण–कार्यक्रम विभाग के डॉ संजीव कुमार शर्मा ने जापान के कुछ छात्रों के लिए हिंदी भाषा शिक्षण हेतु चलाये जा रहे प्रोग्राम का उदाहरण दिया । उन्होंने यह भी बताया कि हिंदी शिक्षण के लिए बोलीवुड पर निर्भर नहीं रहना चाहिए क्योंकि वह जितना भाषा सिखाता नहीं, उतना संस्कार को हानि पहुँचाता है ।

शनिवार 1 नवम्बर को सम्मेलन के अंतर्गत गोल मेज़ बैठक के दो सत्र लगाए गए । इन सत्रों में श्री केसन बधु द्वारा दो दिवसीय सम्मेलन की कार्यवाई पर रिपोर्ट दी । प्रथम सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे श्री विजय कुमार मधु तथा प्रो. चितरंजन मिश्र । द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पद पर डॉ. उदयनारायण गंगू तथा प्रो. महेंद्र किशोर वर्मा आसीन थे । इन दो सत्रों में उपस्थित प्रतिनिधियों द्वारा कई मंतव्य प्रस्तुत किये गये ।

श्री यंतुदेव बुधु अपना आलेख पढ़ते हुए ।

हिंदी प्रचारिणी सभा की ओर से सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ने ये प्रस्ताव रखे –

1. नौकरी की सम्भावनाओं को ध्यान में रखते हुए डिग्री कार्स के पाठ्यक्रम में हिंदी के साथ अंग्रेज़ी के अलावा पर्यटन, बिज़ीनेस मानेजमेंट, संचार तथा अन्य विषयों को भी साथ लिया जाना चाहिए ।

2. भारत में प्रकाशित हिंदी पत्र–पत्रिकाएँ सभी देशों में उपलब्ध होनी चाहिए ताकि शिक्षण में सहयोग मिले ।

3. अवकाश प्राप्त हिंदी अध्यापकों को शिक्षण में सहयोग देने के लिए विदेशों में भेजा जाना चाहिए ।

4. भारत सरकार द्वारा मॉरीशस के छात्रों को दी जाने वाली वार्षिक छात्रवृत्तियों में से हिन्दी को लेकर हिंदी प्रचारिणी सभा के लिए एक छात्रवृत्ति आरक्षित हो क्योंकि 50 वर्षों से अधिक हुए हम भारत के विश्वविद्यालय से हिंदी की परीक्षाएँ करवा रहे हैं ।

यह अंतर्राष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन पूरे रूप से सफल रहा । हिंदी प्रचारिणी सभा की ओर से भारतीय उच्चायोग तथा विश्व हिंदी सचिवालय को, खासकर भारतीय उच्चायुक्त श्री अनूप कुमार मुद्गल, द्वितीय सचिव श्री मीमांसक, विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महा सचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल तथा उनके साथ सभी संलग्न कर्मचारियों को सम्मेलन की सफलता पर बधाई देते हैं । ■

हिंदी दिवस 2014

श्री सत्यदेव प्रियतम अध्यक्षीय भाषण देते हुए।

पंकज पत्रिका के नये अंक का लोकार्पण।

शनिवार 9 अगस्त 2014 को तुलसी जयन्ती के अवसर पर हिंदी भवन के सुरुज प्रसाद मंगर भगत सभागार में हिंदी दिवस भव्य रूप से मनाया गया। समारोह के अध्यक्ष-पद पर श्री सत्यदेव प्रियतम आसीन थे। अन्य कई महानुभाव उत्सव की शोभा बढ़ा रहे थे, जिनमें विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल, भोजपुरी संगठन की अध्यक्षा श्रीमती सरिता बुधु विशेष उल्लेखनीय हैं। उत्सव साढ़े दस बजे शुरू हुआ। सभा के प्रधान ने उपस्थित महानुभावों का स्वागत करते हुए बताया कि सभा हिंदी दिवस का आयोजन तुलसी जयन्ती पर करती है क्योंकि मॉरीशस में हिंदी भाषा के प्रचार में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

श्रीमती सरिता बुधु ने मॉरीशस में भोजपुरी तथा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के बारे में बात की। श्री सुखलाल जी ने भविष्य में हिंदी दिवस कैसे मनाया जाए तथा हिंदी भाषा के प्रति जवानों की क्या ज़िम्मेदारियाँ होनी चाहिए विषय पर प्रकाश डाला। कविता-वाचन प्रतियोगिता 2014 में प्रथम स्थान प्राप्त छात्रा धानिष्ता तिंगरिया ने अपनी कविता सुनायी, जिसे सुनकर सभागार तालियों से गूँज उठा।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री सत्यदेव प्रियतम जी ने भाषा के प्रचार-प्रसार तथा छात्रों के भविष्य के बारे में बात करते हुए अपना विचार दिया। उपस्थित छात्र, अभिभावक, शिक्षक, सभा के सदस्य तथा हिंदी प्रेमी बड़े ध्यान से प्रियतम जी के भाषण सुन रहे थे। कार्यक्रम के अंतर्गत सभा द्वारा प्रकाशित पंकज पत्रिका के नये अंक का लोकार्पण श्रीमान सत्यदेव प्रियतम के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। वर्ष 2013 के परिचय से उत्तमा तक की परीक्षाओं में प्रथम दस में स्थान प्राप्त करनेवाले छात्रों को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। प्रियतम जी ने अपनी ओर से पुरस्कृत छात्रों को पोल ए वर्जिनी नामक पुस्तक के हिंदी अनुवाद की एक-एक प्रति दान में दी।

उत्सव की समाप्ति पर सभा के उप-प्रधान श्री तारकेश्वरनाथ ग्रिधारी ने उपस्थित मेहमानों को आभार प्रकट किया। बाकी उत्तीर्ण छात्रों को भी प्रमाणपत्र प्रदान किये गये। कार्यक्रम के प्रस्तोता सभा के मंत्री श्री धनराज शम्भु जी थे। ■

ज़िलाध्यक्षों की बैठक

शनिवार 23 अगस्त को हिंदी भवन में ज़िलाध्यक्षों की बैठक लगी जिसमें मॉरीशस के लगभग सभी प्रांतों के निरीक्षकगण उपस्थित रहे । उस बैठक का उद्देश्य था – सभा द्वारा आयोजित परीक्षाओं में संलग्न निरीक्षकों को परीक्षा संबंधी सूचना दी जाए ।

सभा के प्रधान ने उपस्थित निरीक्षकों का स्वागत किया तथा कार्य सूची के अनुसार बैठक के कार्यों पर बातचीत हुई । सभा के प्रधान ने यह सुझाव दिया कि सभी संलग्न संस्थाओं में परीक्षा के बाद नवम्बर के अंत तक प्रमाणपत्र वितरण हो जाना चाहिए । क्योंकि कई संस्थाओं में वार्षिकोत्सव का आयोजन होता है और बच्चों को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरण किये जाते हैं ।

निरीक्षकों की ओर से कई सुझाव प्रस्तुत किये गये जिनपर विचार किया गया । परीक्षा के दौरान होने वाली कठिनाइयों का भी जायज़ा लिया गया । प्राथमिक तथा माध्यमिक कक्षाओं में पढ़नेवालों की संख्या को भी नोट किया गया । 20 सितंबर को होनेवाली छठी कक्षा की राष्ट्रीय परीक्षा की तैयारी पर भी बात हुई । ■

छठी कक्षा की परीक्षा – 2014

हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा आयोजित छठी कक्षा की वार्षिक परीक्षा राष्ट्रीय तौर पर ता. 20 सितम्बर को देश के इक्कीस केन्द्रों में सम्पन्न हुआ जिनमें अठारह सरकारी स्कूल तथा तीन गैर-सरकारी कालेज थे । सायंकालीन तथा सप्ताहांत स्कूलों में पढ़नेवाले छात्रों ने इस परीक्षा में भाग लिया । दिसम्बर में समावर्तन समारोह के अवसर पर इस परीक्षा में दस प्रथम स्थान पर आनेवाले छात्रों को पुरस्कृत किये जाएँगे ।

प्राथमिक स्तर पर सभा की ओर से पहली से छठी कक्षा तक के छात्रों का निरीक्षण, परीक्षण, प्रश्नपत्र एवं प्रमाण पत्र वितरण सभा अपने खर्च पर करती आ रही है। छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए सभा नकद पुरस्कार भी प्रदान करती है। ■

हिंदी प्रचारिणी सभा
की कार्यकारिणी समिति की ओर से
सभी सदस्यों तथा हिंदी प्रेमियों को
नये वर्ष 2015
की हार्दिक शुभकामना है।

हिंदी दिवस 2014 के अवसर पर लिए गए कुछ चित्र ।